AGPE THE ROYAL GONDWANA RESEARCH JOURNAL
OF HISTORY, SCIENCE, ECONOMIC, POLITICAL AND SOCIAL SCIENCE
ISSN (E): 2583-1348 | A Peer reviewed | Open Access & Indexed
Volume 05 | Issue 04 | April 2024 | www.agpegondwanajournal.co.in | Page No. 12-16

भागवद्गीता में नारी भावना एवं वर्तमान में उसकी प्रासंगेकता।

शोपतसिंह
सहायक प्रोफ़ेसर- संस्कृत साहित्य
राजकीय महाविद्यालय, सिद्धमुख चूरू, राजस्थान

सारांश-:

भारतीय संस्कृति में नारी के सम्मान को बहुत महत्व दिया गया है। संस्कृत में एक श्लोक है- 'यत्र पूज्यंते नार्यस्तु तत्र रमन्ते देवता:। अर्थात्, जहां नारी की पूजा होती है वहां देवता निवास करते हैं। महाभारत में कहा गया है कि जिस कुल में नारियों की उपेक्षा भाव से देखा जाता है उस कुल का सर्वनाश हो जाता है। शतपथ ब्राह्मण में कहा गया है कि नारी नर की आत्मा का आधा भाग है। नारी के बिना नर का जीवन अधूरा है इस अधूरेपन को दूर करने और संसार को आगे चलाने के लिए नारी का होना जरूरी है। जिस कुल में नारियों कि पूजा, अर्थात् सत्कार होता हैं, उस कुल में दिव्यगुण, दिव्य भोग और उत्तन संतान होते हैं और जिस कुल में स्त्रियों कि पूजा नहीं होती, वहां तो उनकी सब क्रिया निष्फल हैं।

मुख्य शब्द-:

भारतीय संस्कृतिचरित्र ,सुसंस्कृत ,जन्मदात्री ,वैदिक युग ,दिव्यगुण ,सत्कार ,नारी भावना ,वान ,गरिमा , ,बाजारवाद ,पितृसत्तात्मक ,वंदनीय ,महिमामय ,सत्तात्मक-षपुरु ,अस्मितामूलक ,फेमिनिज्म ,वंशवाद ,कुलीनता शालिनता आदि।

प्रस्तावना-:

नारी को वैदिक युग में देवी का दर्जा प्राप्त था। नारी की स्थित से समाज और देश के सांस्कृतिक और बौद्धिक स्तर का पता चलता है। यदि नारी को धर्म, समाज और पुरुष के नियमों में बांधकर रखा गया है तो उसकी स्थिति बदतर ही मानी जा सकती है।

नारी ही मां है और नारी ही सृष्टि। एक सृष्टि की कल्पना बगैर मां के नहीं की जा सकती है। मां अर्थात माता के रूप में नारी, धरती पर अपने सबसे पवित्रतम रूप में है। माता यानी जननी। मां को ईश्वर से भी बढ़कर माना गया है, क्योंकि ईश्वर की जन्मदात्री भी नारी ही रही है।

CORRESPONDING AUTHOR:	RESEARCH ARTICLE
Shopat Singh Asst. Prof - Sanskrit Litreture Govt. College, Siddhamukh, Churu, Rajasthan Email: shopatpoonia@gmail.com	

स्त्री समाज का दर्पण होती है। यदि किसी समाज की स्थिति को देखना है, तो वहां की नारी की अवस्था को देखना होंगा | राष्ट्र की प्रतिष्ठा, गरिमा, उसकी समृद्धि पर नहीं अपितु उस राष्ट्र के सुसंस्कृत व चरित्रवान नागरिकों से हैं और राष्ट्र को, समाज को, ये संस्कार देती है कि स्त्री जो एक माँ हैं, निर्मात्री हैं । माँ अपने व्यवहार से बिना बोले ही बच्चे को बहुत कुछ सिखा देती है। स्त्री मार्गदर्शक हैं वह जैसा चित्र अपने परिवार के सामने रखती हैं परिवार व बच्चे उसी प्रकार बन जाते हैं स्त्री एक प्रेरक शक्ति हैं वह समाज और परिवार के लिए चैतन्य-स्वरूप हैं परंतु वही राष्ट्रीय चैतन्य आज खुद सुषुप्तावस्था में है।

आज नारी जीवन पर फैशन और पाश्चात्य संस्कृति का प्रभाव बढ़ता जा रहा हैं। समाज भी अश्लीलता का उल्लंघन करने में लगा हुआ हैं। ऐसा नही है कि फैशन पहले नहीं था क्या पहले जमाने में प्रेम विवाह नहीं होते थे। उस समय तो गंधर्व विवाह और यहाँ त्तक की स्वयंवर भी पिता तय करते थे, और कुछ स्वयं कन्याएं भी करती थी। पुरानी संस्कृति में सब तरह से श्रृंगार भी महिलाएं करती थी और आमूपणों और फूलों से भी सजती थी। इसीलिए हम सबके सामने यह चुनौती है कि केवल अश्लीलता हम पर हावी न हों और न हीं हमारी संस्कृति, व हमारे संवेदनाओं पर चोट करें।

गीता के अनुसार, मीरा प्रेम और भक्ति की तन्मय गायिका के रूप में ख्यात और मान्य हैं। वे श्रीकृष्ण की प्रेमिका भी हैं, और उनकी भक्त भी। ऐसी प्रसिद्धि है कि उन्होंने बचपन में ही श्रीकृष्ण के प्रेम में बंध गईं, पति-गृह में वे श्रीकृष्ण की प्रतिमा के साथ आई और भोजराज की विवाहिता होते हुए भी वे मन में श्रीकृष्ण को ही पति मानती रहीं, उन्हीं के प्रति समर्पित रहीं। श्रीकृष्ण को पति मानने की मीरा की बात को, मीरा के चाहे अनुसार, राज परिवार की, लोक की, सगे-संबंधियों की स्वीकृति मिल गई होती या वे सब मीरा के क्रिया-कलापों के प्रति त्तटस्थ या उदासीन हो गए होते, और मीरा बाधा-रहित श्रीकृष्ण के प्रति अपनी मनोभावनाओं को अभिव्यक्त कर पातीं, तव क्या जिस रूप में आज हम मीरा का स्मरण कर रहें हैं, उसी रूप में मीरा को याद करते? या कि जिस तरह आज, मीरा के समय में पांच सौ सालों बाद, मीरा को-नई सदी के मुख्य विमर्शों में एक-स्त्री-विमर्श से जोड़कर देख रहे हैं, उन्हें अपना समकालीन मान रहे हैं वैसा समकालीन उन्हें मानते? शायद नहीं। अधिक से अधिक, ऐसी स्थिति में हम मीरा का स्मरण, उनके महत्त्व का आंकलन उसी तरह करते, मीरा हमें उसी तरह रमरणीय होतीं जैसे विद्यापति, सूरदास, जयदेव आदि आज हमारे लिए हैं।

नारी के संदर्भ में किया गया विचार स्त्री विमर्श कहलाता है। हिंदी साहित्य में स्त्री विमर्श अन्य अस्मितामूलक विमर्शों की तरह ही विमर्श रहा है स्त्री विमर्श को इंग्लिश में 'फेमिनिज्म' कहा गया है। आज जिस स्त्री-विमर्श को लेकर अनेक तरह की बातें हो रही हैं वह विमर्श यशपाल की चर्चा के बिना अधूरा है। अकेले यशपाल ने स्त्री को लेकर जितना और जिस तरह का लिखा है उतना और उस तरह का किसी और ने नहीं लिखा है,वे स्त्री की पूर्ण स्वतंत्रता के पक्षधर थे । स्त्री-जीवन का कोई भी कौना यशपाल की दृष्टि से वंचित नहीं है। आज जिस खुलेपन की बात हो रही है वह संपूर्ण मानवीय गरिमा के साथ यशपाल के साहित्य में मौजूद है। आज बाजारवाद ने स्त्री को जिस तरह से बाजार की वस्तु बना डाला है, यशपाल का साहित्य उसका विचारपूर्ण सार्थक प्रतिवाद प्रस्तुत करता है। कुलीनता, वंशवाद, पारंपरिक विवाह, सुधारवादी फार्मुले आदि का एकमुश्त विरोध यशपाल के यहां है। स्त्री-जीवन को लेकर जितने तरह के निषेध नकार हैं, सबका प्रतिकार। समकालीन स्त्री-विमर्श में मीरा की भागीदारी जरूरी है। मीरा ने अपने समय में अपनी सीमाओं में जो किया बड़ा काम था। सन्तों के प्रतिरोध की जो वाणी बोली उसका भी हमारे लिए महत्त्व है। व्यवस्था न कबीर बदल सके, न मीरा। उनके लिए यह संभव भी न था। उनका महत्त्व इस वात में है कि मुक्ति के सपने को उन्होंने पराधीनों की आंखों में

जीवित रखा। नई सदी में भी वह उनकी आंखों में जीवित हैं। इन्हीं आंखों में जितना कबीर हमारे समकालीन है, उतना ही मीरा।

अनादिकाल से ही संसार के सभी भागों में स्त्रियों की स्थिति एवं समस्याएँ एक-सी रही हैं। हर समाज में (कुछ अपवादों को छोड़कर) पितृसत्तात्मक व्यवस्था रही है जिसमें पुरूष ने स्त्री पर पूर्ण स्वामित्व कायम रखा। यद्यपि आदम समाज में मातृसत्तात्मक व्यवस्था के उदाहरण मिलते हैं किंतु जैसे ही मनुष्य शिकारी मनुष्य से खेतिहर मनुष्य बना समाज पितृसत्तात्मक हो गया और तब से स्त्री लगातार शोषण का शिकार होती रही हैं। स्त्री-विमर्श की सफलता इसी में है कि उनकी अस्मिता एवं निजत्व कायम रहे और पुरूष वर्चस्ववादी मानसिकता में उदारता आ सके। पुरूष के मन से संकीर्ण वर्चस्ववादी सोच जब तक नहीं निकल जाती स्त्री-पुरूष की समानता कदापि संभव नहीं। बीसवीं सदी में स्त्री स्वयं तय करेगी कि उसे अपना जीवन कैसे चलाना है। अपना शरीर किसे सौपना हैं, माँ बनना है या इस महिमामय गरिमा के मिथ से वंचित रहकर भी जिया जा सकता है।

इस प्रकार हम देखते हैं कि स्त्री निंदा में कोई किसी से कम नहीं है! क्या नारी विमर्श के पैरोकार प्रेमचंद, तुलसी, कबीर का पुनर्मूल्यांकन करेंगे? क्या स्त्रियाँ रामचरित मानस को अपनी आस्था के आसन से नीचे उत्तारकर उसे खारिज करेंगी? नारी-विमर्श के पैरोकारों से इस प्रश्नों का भी उत्तर माँगना चाहिए। मातृ-सत्तात्मक समाज रहा हो या पितू-सत्तात्मक स्त्री को देह की भाषा में ही व्यक्त करने और होने का खेल चलता रहा।

इस खेल में स्त्री भी वरावर की हिस्सेदार रही। उसने इस आरोपण को सच की तरह अंगीकृत कर लिया कि वह एक देह है और इस देह की एक मात्र आवश्यकता है यौन-तृप्ति। यह मानते हुए भी कि यौन-सम्वन्ध द्विपक्षीय अवधारणा है जिसके प्रति पुरुष भी उतना ही लालायित रहता है। विकास के किसी भी मोड़ पर पुरुषों की काम-प्रवृत्ति का उस त्तरह से मनोविश्लेषण नहीं किया गया जैसा कि स्त्रियों का। इसका परिणाम यह हुआ कि सारी वर्जनाएँ स्त्रियों पर ही थोप दी गई और पुरुषों को स्वच्छंद छोड़ दिया गया और स्त्रियाँ भोग्या बनने और वर्जनाओं के उल्लंघन के नाम पर लांछित होने को अभिशप्त होती रहीं। यही उनकी नियति बन गयी और उन्हीं के मुँह से इसे स्वीकार भी कराया गया। यह पुरुष-सत्तात्मक समाज के नीति-नियामकों की जीत और रित्रियों की सबसे वड़ी हार थीं, जिस पर ईश्वर की सहमति का ठप्पा भी लगा लिया गया।

आज से दस हजार साल पहले आर्य या कहें कि वैदिक काल में नारी की स्थिति क्या थी यह सभी के लिए विचारणीय हो सकता है। नारी की स्थित से समाज और देश के सांस्कृतिक और वौद्धिक स्तर का पता चलता है। यदि नारी को धर्म, समाज और पुरुष के नियमों में बांधकर रखा गया है तो उसकी स्थिति बदतर ही मानी जा सकती है किंतु जिन्होंने वेद-गीता पढ़े हैं वे अच्छी तरह जानते हैं कि दस हजार वर्ष पूर्व जबकि मानव जंगली था, आर्य पूर्णतः एक सभ्य समाज में बदल चुके थे। तभी तो वेदों में जो नारी की स्थिति का वर्णन है उससे पता चलता है कि उनकी स्थिति आज के समाज से कहीं अधिक आदरणीय और स्वतंत्रता पूर्ण थी।

वैदिक काल में कोई भी धार्मिक कार्य नारी की उपस्थिति के बगैर शुरू नहीं होता था। उक्त काल में यज्ञ और धार्मिक प्रार्थना में यज्ञकर्ता या प्रार्थनाकर्ता की पत्नी का होना आवश्यक माना जाता था| बहुत-सी नारियां यदि अविवाहित रहना चाहती थीं तो अपने पिता के घर में सम्मान पूर्वक रहती थी। वह घर परिवार के हर कार्य में साथ देती थी। पिता की संम्पति में उनका भी हिस्सा होता था। सनातन वैदिक हिन्दू धर्म में जहां पुरुष के रूप में देवता और भगवानों की पूजा-प्रार्थना होती थी वहीं देवी के रूप में मां सरस्वती, लक्ष्मी और दुर्गा का वर्णन मिलता है। वैदिक काल में नारियां मां, देवी, साध्वी, गृहिणी, पत्नी और बेटी के रूप में ससम्मान पूजनीय मानी जाती थीं। बाल विवाह की प्रथा तब नहीं थी। नारी को

पूर्ण रूप से शिक्षित किया जाता था| उसे हर वह विद्या सिखाई जाती थी जो पुरुष सीखता था- जैसे वेद ज्ञान, धनुर्विद्या, नृत्य, संगीत शास्त्र आदि। नारी को सभी कलाओं में दक्ष किया जाता था उसके बाद ही उसके विवाह के संबंध में सोचा जाता था। इसके कई उदाहरण मिल जाएंगे।

पुराने समय में पुरुष के साथ चलने वाली नारी मध्य काल में पुरुष की सम्पति की त्तरह समझी जाने लगी] इसी सोच के चलते नारियों की स्वतंत्रता खत्म हो गई। मध्य काल में नए नए जन्मे तथाकथित धर्मों ने नारी को धार्मिक तौर पर दवाना और शोषण करना शुरू किया। धर्म और समाज के जंगली कानून ने नारी को पुरुष से नीचा और निम्न घोषित कर उसे उपभोग की वस्तु बनाकर रख दिया। वैदिक युग की नारी धीरे-धीरे अपने देवीय पद से नीचे खिसकर मध्यकाल के सामन्तवादी युग में दुर्बल होकर शोषण का शिकार होने लगी। तथाकथित मध्यकालीन धर्म ने नारी को पुरुषों पर निर्भर बनाने के लिए उसे सामूहिक रूप से पतित अनधिकारी बताया गया। उसके मूल अधिकारों पर प्रतिबंध लगाकर पुरुष को हर जगह बेहतर बताकर नारी केअवचेन में शक्तिह्दीन होने का अहसास जगाया गया जिसके चलते उसे आसानी से विद्याहीन, साहसहीन कर दिया जाए । समाज, देश और धर्म के नारी को अनुपयोगी वनाया गया ताकि वह अपने जीवन यापन, इज्जत और आत्मरक्षा के लिए पूर्णतः पुरुष पर निर्भर हो जाए। इस सभी तरह के भय और दहशत के माहौल के चलते हिन्दुओं में भी पर्दप्रथा, वाल विवाह प्रथा और नारियों को शिक्षा से दूर रखने का चलन बढ़ गया ।

वर्तमान में नारी चांद पर पहुंच गयी है कल्पना चावला का नाम तो कोई नहीं भूला होगा। इसके साथ-साथ नारी देश के उच्च पदों पर आसीन है और हमारे देश की राष्ट्रपति भी तो एक स्त्री हैं हमें तो केवल स्वतंत्रता के अंदर के भाव को समझना होगा। बेटी को उच्चछुंखल बनाना तो आसान है पर साथ में यह भी ध्यान होगा कि कहीं यह आजादी हमारी शर्मिंदगी का कारण ना बन जाए। हमें अपनी मर्यादाओं की सीमा तय करनी होगी और समझना होगा कि इनका उल्लंघन करने पर कौन से दुष्परिणाम भुगतने पड़ सकते हैं। हमें वर्तमान समय में जो नारी की स्थिति है वह पहले से भी कहीं बदत्तर होती जा रही है जीवन से जुड़े सभी क्षेत्रों में नारी पर अत्याचार एवं शोषण किया जा रहा है अतः अब आवश्यकता इस बात की है हम स्वयं जागरूक हो एवं अपने प्रति हो रहे दिन प्रतिदिन बढ़ते अत्याचारों का विरोध तो करें ही साथ में हर कदम पर सतर्क रहें । प्रेमचन्द युग में नारी के प्रति नई चेतना का उदय हुआ। अनेक शत्ताब्दियों के पश्चात् राष्ट्रकवि मैथलीशरण गुप्त ने नारी का अमुल्य महत्व पहचाना और प्रसाद जी ने उसे मात्तृशक्ति के आसन पर आसीन किया जो उसका प्राकृतिक अधिकार था। आजादी के बाद से नारी के हित में कई कानून बनाये गये। नारी को लाभान्वित करने के लिए नित नई योजनाओं का आगाज भी हो रहां उनकी सुरक्षा को ध्यान में रखते हुए कठोर से कठोर कानून भी बनाये गये हैं। इसके बावजूद समाज के कुछ हिस्से को दंड का भी खौफ नही है और नारी की पहचान को कुंठित्त मानसिकता का ग्रहंण लग जाता है। "नारी तुम श्रद्धा हो" वाले देश में उसका अस्तित्व तार-तार हो जाता है। आधुनिकता की दुहाई देने वाली व्यवस्था में फिल्म हो या प्रचार उसे केवल उपभोग की वस्तु बना दिया गया है। लेडीज फर्स्ट जैसा आदर सूचक शब्द वास्तविकता में तभी सत्य सिद्ध होंगा जब सब अपनी सोच को सकारात्मक बनाएंगे ।

उपसंहार:-

नारी की अनादिकाल से ही संसार के सभी भागों में स्थिति एवं समस्याएं एक-सी रही हैं। हर समाज में (कुछ अपवादों को छोड़कर) पितृसत्तात्मक व्यवस्था रही है जिसमें पुरूष ने स्त्री पर पूर्ण स्वामित्व कायम रखा। यद्यपि आदम समाज में मातृसत्तात्मक व्यवस्था के उदाहरण मिलते हैं किंतु जैसे ही मनुष्य शिकारी मनुष्य से खेतिहर मनुष्य बना समाज

पितृसत्तात्मक हो गया और तब से स्त्री लगातार शोषण का शिकार होती रही हैं। स्त्री-विमर्श की सफलता इसी में है कि उनकी अस्मिता एवं निजत्व कायम रहे और पुरूष वर्चस्ववादी मानसिकता में उदारता आ सके। पुरूष के मन से संकीर्ण वर्चस्ववादी सोच जब तक नहीं निकल जाती स्त्री-पुरूष की समानता कदापि संभव नहीं। आज की नारी शिक्षित और आत्मनिर्भर है।

आधुनिकता की इस अंधी दौड़ में नारी को भी अबला नहीं सबला बनकर इतना सशक्त बनना है कि बाजारवाद का खुलापन उसका उपयोग न कर सके। नारी को भी अपनी शालीनता की रक्षा स्वयं करनी चाहिए तभी समाज में नारी की गरिमा को सम्पूर्णता मिलेगी।

सन्दर्भ सूची :-

1. स्त्री-विमर्श में मीरा कुछ प्रश्न : कुछ जिज्ञासाएं- शिव कुमार मिश्र,मई 24, 2008
2. श्रीमद्भगवत गीता, श्लोक 140, 632,
3. यशपाल का कहानी संसार : एक अंतरंग परिचय, लोक भारती प्रकाशन. 2005
4. महाभारत की संरचना : बच्चन सिंह
5. वहीं पृ. 9
6. नारी विमर्श दशा और दिशा : डॉ. विजय लक्ष्मी कुमारी
7. वहीं पृ. 107
8. इक्कीसवीं सदी की ओर : सुमन कृष्णकांत, राजकमल प्रकाशन, संस्करण 2000
9. डॉ. दीपा जैन : महिला सुरक्षा एवं महिला पुलिस, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, संस्करण 2007
10.भारतीय समाज में महिलाओं की स्थिति एवं सामाजिक समस्याएं : एक समाज शास्त्रीय अध्ययन, डॉ. राम समुद्र सिंह,

■ ■ ■